

स्वतंत्र मौर्यकालीन वास्तुकला के विशेष अक्षर बन्धते हैं, जिन स्वतंत्रों में प्रयुक्त डोरों प्रतीक न छोड़ दें। इन स्वतंत्रों के प्रयुक्त डोरों की उन्नर्पतिष्ठा भी बनते हैं, जिन दृष्टि के स्वतंत्रों में प्रयुक्त चक्र अक्षीय हैं। यह विषय क्रियाक्षीलता तो व्यक्त ही नहीं

कलता बाटिक और श्री उमा परिकल्पना को प्रयोगित करता है जिसमें चक्रवर्ती भग्नांट हारा ब्रह्मांड पर चक्रपर्तित्व की स्थापना कर ली गयी है।

ब्राह्मोंकु के कर्तव्य से लैकर श्रीष्ठि तक न छैल उस तात वी वालालकता नी गतिशीलता प्रदान करते हैं बाटिक शास्त्र की विशेषता वी अंग व्यक्त करते हैं, जैसे-

- (i) उच्च आधार - यह शास्त्र की जनता से लैकर स्थापित/स्थित होने के क्षणों हैं,
- (ii) आधार के नीचे मोर की बाकृति, मौर्य वंश की दुमियाद या खूल स्त्रीत के कप के प्रतिका।
- (iii) स्तम्भ की स्मृत्यता (Smoothness), यह संक्षेप करते हैं कि राज्य में संतुल्यता, शास्त्र का समान नियंत्रण करने वाली अंगोंजन।
- (iv) पशुओं की उपासिति - प्रकृति के साथ सहआसित्व
उत्पादकता
गतिशीलता
संशालन
- (v) श्रीष्ठि पर सिंह - चक्रपर्तित्व का श्रीष्ठि पर स्थापित होना,
शक्तिमान हो जाएं और सर्वदशी

१७/१२/२०१७

कला क्षेत्र लोकवर्णी विषय क्षेत्र

आदर्श / व्यक्तित्व

Mode of Expression

[मनोदशा]

वैयाकरित्व

व्यवहार / आचरण

कार्य

विचार / चिंतन

सामूहिक / सामुदायिक

जीवन क्रम

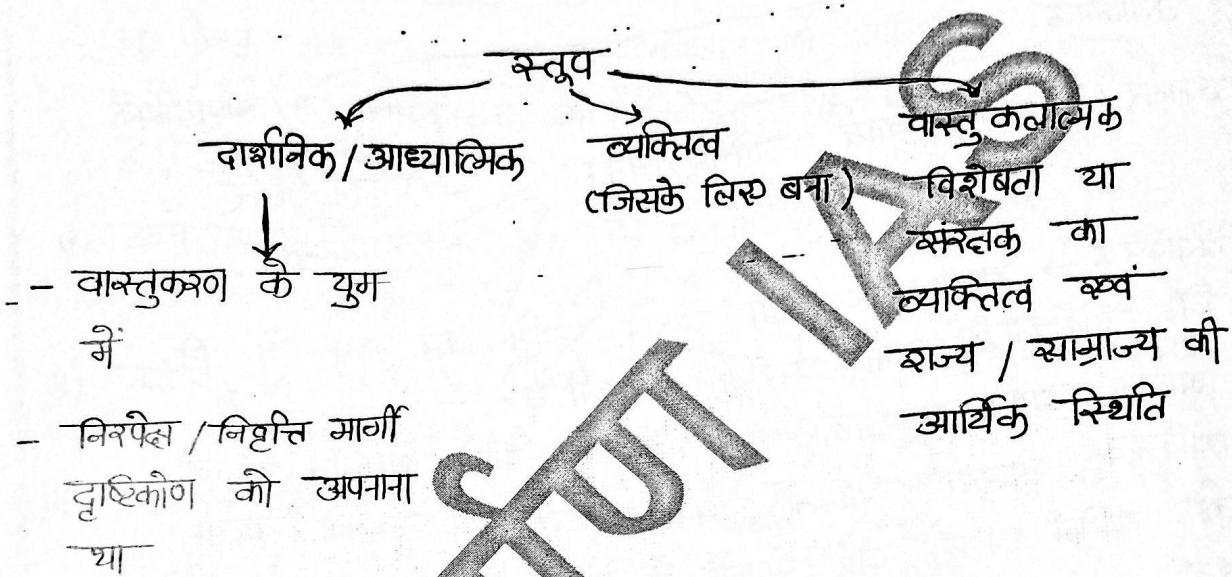
वातावरण

वैयाकरित्व → कला / वास्तुकला अपने आभियक्त क्षेत्र में नि.
लि। विशेषता और की प्रदर्शित करती है।

- शाब्दिक भाषा संरक्षक या ऐसे पद जिसे समर्पित हैं, जो व्यक्तित्व, आदर्श, व्यषित, व्यवहार, आचरण भाषा कृत्यों को आमिल किया जा सकता है, एकांकिता के दौर पर बुझ मृत्यु के प्रबन्धन और आध्यात्मिक चक्रवर्तित्व की प्रयापिता व्यवहार चाहते हैं और अशोक लकड़े प्रमिकों के आध्यात्मिक अपने नाजैनिक चक्रवर्तित्व के बाय छुड़ा के द्वारा निकल दिया गया व्याख्या उसने क्षमों का निर्माण व्याख्या जिसकी दृष्टि महावंश और बीपवंश (त्रीत्यंकार्द्ध ग्रंथ) से और होती है।

- कोई और कला भाषा वास्तुकला कंबंदी निर्माण तब तक स्थायी होकर स्वीकृति प्राप्त नहीं कर सकता जब तक कि उसमें होकर जीवन (folk life) के मूलों परा प्रतिनिधित्व, होकर कथानकों की उपस्थिति तथा होकर आदर्शों का संदेश मौजूद न हो। संश्वतः यही

कारण है कि स्तूप के आवंश द्वारा धार्मिक - आध्यात्मिक
वास्तुकला मंदिरों के युग से ही है तथा मनवरों के युग
तक पहुँचने पर श्री बौद्ध विशेषताओं से संपन्न करी।

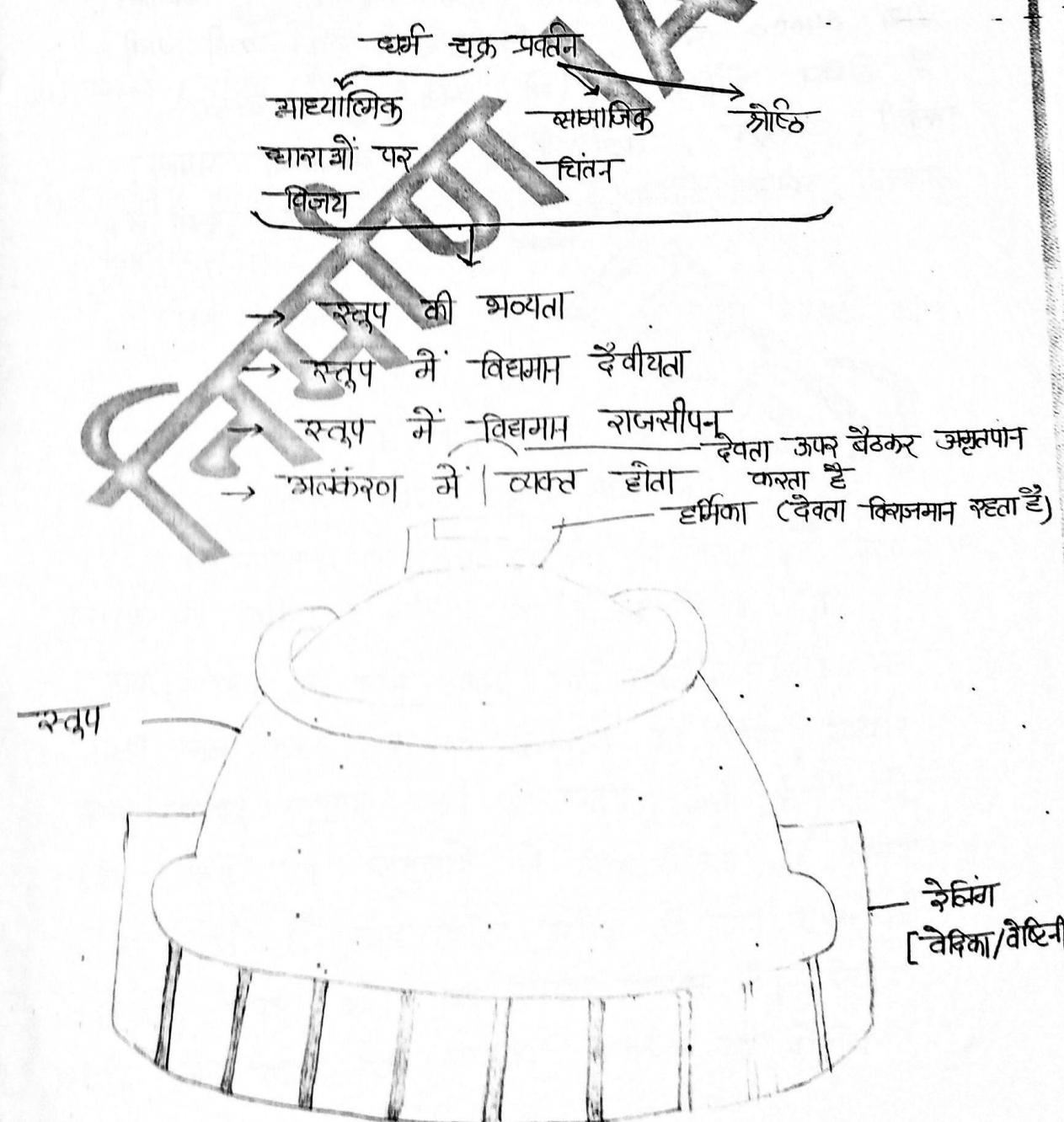


इसका तार्क्य यह हुआ कि बुद्ध कशी श्री नवउदित वास्तुवादी (मैट्टकलिक्ष्म) का उन्मुख नहीं चाहते थे लेकिन वे तत्कालीन जीवन में इसके व्याय - २ ज्ञान, नीतिक आचरण, नीतिक चिंतन, श्रीष्टम प्रयास और नविकल्प्याग की प्रतिष्ठा चाहते थे। यदि स्तूपों पर किसी आकर्षी की व्यक्ति किया जाये तो इसके बुड़े चित होंगे - बुद्ध का जन्म, बुद्ध का गृहत्याग (महाभिनिष्क्रम), बुद्ध का ज्ञान प्राप्त, माव पर विजय (संकिसा का हाथी) और बुद्ध गा मधु दान - - -।

ये विषय कु तबु बुद्ध के आकर्षी की व्यक्ति करते हैं वही इसी प्रेम कथानकों के कथ में उन ग्रीकवर्ण विषयों की श्री व्यक्ति करते हैं

जो आनंदीय जीवन में दीर्घिकालिक पंक्षपत्र के बाप में विद्यमान है।

स्थानिकता → बुद्ध ने अपने जीवनकात में ही यह शङ्खच्छा व्यक्ति की रुपी कि उनकी मृत्यु के पश्चात् उनके आवश्यकों पर उसी प्रकार का भ्रमण (स्तूप) निर्मित हो जिस प्रकार से चक्रवर्ती राजाओं के आवश्यकों पर निर्मित होते हैं।



अशोक के द्वासनकाल में स्तूपों का निर्माण आवंथ हुआ।
इसमें योर्हि संशय नहीं कि स्तूप बुद्ध के आदर्श
अर्थे दैवीय व्यक्तित्व और तत्त्वालीन लोकविषयों के प्रतिनिधित्व-
कर्ता थे परंतु कक्ष निर्माण के तोंके पर सभार अशोक
के माध्यम से अपने बाजनीतिक आदर्शों, अपने व्यक्तित्व
और राज्य के स्वरूप की प्रतिष्ठा अर्थे कक्ष के माध्यम
से (कक्ष द्वारा के कप में) कल्पा चाष बहा था।
यद्यपि श्रीबंकार्ह द्वार्थों (विशेषकर महावंश) में अशोक
द्वारा ४५०० स्तूपों के निर्माण की बात कही गयी
है लेकिन औरिकृ कप में कक्ष के प्रमाण केवल
साँची, अरहत, तदाशिला, कलोज, कोशाम्बी, प्रयाग,
श्रावस्ती, कनाकस, कश्मीर आदि से ही प्राप्त हैं।

मूर्तिकला :-

(i) विषय → धार्मिक / भौतिक
 → आंतिक / हीनक

(ii) कला का स्तर → वैयक्तिक
 → दोषीय
 → राजवीय / संगठित / नाष्टीय

(iii) शंपकि / संबंध / संयोजन (विविधता)

(i) सृजन / कलात्मक अभिकाचि का आकृति में मौजिकु विषय धर्म रहा।

उदा - ① सिंधु सभ्यता, जौ मातृदेवी, पुरुष देवताओं की मूर्तियाँ निर्मित हुयी

② देवों में श्री मूर्तियाँ का उल्लेख है, लेकिन उसके आंतिक प्रमाण नहीं मिले।

③ महाग्राह में कक्ष अध्याय में अक्षर ह्याश देवकुल में कशाय की छूटि की प्रतिष्ठा का उल्लेख मिलता है।

अथर्व जब तक धर्म अप्ता कोई वास्तविक आंतिकु कप गृहण नहीं करता तब तक मूर्तिकला का विषय, आवार क्षेत्रे प्रमाण लुप्त हो जाता। स्थिरी स्थिरी में जिन लोगों या समुदायों ने लोकु चेतना के विषय मौजूद होते हैं, वह उन्हें प्रतीगों के कप (पशु, फल, वनभ्यापि) उपकरणों का प्रयोग करता है। स्थिरी स्थिरी में कला का वक्कप व्यामीय या दोषीय

बहता है और उसका विषय धार्मिक, प्राकृतिक विषयों के प्रतीकों तक सीमित रह जाता है।

गौरीकाल में कला (कार्य- कावण संबंध)

गौरी साम्राज्य की प्रतिष्ठा के समय तक ब्राह्मण धर्म आसंगाद्धि ए होने भे काश्च, संगठनात्मक कामता से व्यंपन बोड़ फिर जैन धर्म भे मुकाबले कमजोर स्थापित हुआ या इसपर उसकी प्रश्नावेत्तावता स्थापित नहीं हो पायी। बोड़ धर्म अनीश्वरवादी (अनाल्मित्री) ग्री इसलिए धर्म के लेन्ड में शिहा प्रमुख की ओर ईश्वर का आतिक आकार समाप्त हो चाया। क्वामाविक है कि कला के किस क्षेत्र में विषय उस काल में जौबूद नहीं रहा होगा जिसमें आसक की अतिकथि रखका। इस स्थिति में कला के किस क्षमानीय विषय और कैसे कलाकार ही जौबूद करे हों जिसमें लोकवर्य विषयों की चेतनात्मकता कथानकों भे कप में या प्रतीकों भे कप में जौबूद रही हो, उन कलाकारों ने कला गी अभिव्यक्ति देने भे किस ढैल रमफुस्ति का नटुवा ढैल), दाथी (संकित्ता), धोड़ा (मपिल वस्तु), यहा (पक्खम), यहिणी (दीदाक्यांज) के माध्यम से व्यक्त किया।

कुषाणकालीन चूर्तिकला ↴

कुषाणों भे आकृत में आगमन के साथ ही कुछ महत्वपूर्ण

परिवर्तने हुये थे जिनके नाम साक्षीय कला क्यानीयता / सैमीयता की परिवर्ति से निकलकर शास्त्रीय फलक पर क्षणपित होने में कफल हो गयी। इन परिवर्तनों को निं. बि. बिंदुओं द्वारा व्यक्त किया जा सकता है-

① कुषाण बाहर भे डाये थे और अब तक उने आवत ले राजत के सिंहांतों में बाहरी के लिए गोड़ क्षमा व्यष्ट नहीं किया गया था। क्षेत्र में कुषाणों उने किंच यह जकरी था कि कुषाणों ने किंच धार्मिक क्षीकृति प्राप्त करने उने विश्व प्रयास करें। उल्लेखनीय है कि कुषाणों ने स्वयं को अमठित्स / सच्चद्वयमठित्स (धर्म) सत्य धर्म की प्रतिष्ठा।) ^{अमेरिका} धोषित किया और नस्तके बदले में देवपुत्र उनके काप में देवीय क्षमा प्राप्त कर लिया। इसका तात्पर्य यह हुआ कि कुषाणों ने बाजनैतिक उद्देश्य और सत्य धर्म (बौद्ध धर्म) की प्रतिष्ठा व विस्तार करने-होने के पुरक बन गये। चूंकि कनिष्ठ ने चौंथी बौद्ध संगीति बुलाकर मध्यम धर्म की प्रतिष्ठा कर उली थी, जिसका परिणाम यह हुआ कि बौद्ध धर्म अब शिक्षा व प्रतीकों की बजाए बुझ व बौद्धिकत्वों की और्तिक उपस्थिति उनके काप में व्यक्त होने लगा। इस तरह से कला को कष्ट आदानभूत विषय मिल गया।

② कुषाण मध्य कश्मीर के बाये थे लैकिन उनसे जुड़े कुछ रूप संविशेषताएँ होने पूरी तरह जी जाती हैं जैसे - कनिष्ठ 'हमकुंजर' की उपाधि धारण करता है जो कौमन कर्माये की थी। इसका तात्पर्य यह हुआ कि आवत में कह कला उने माध्यम के अपने

छपकितिव की शैमन क्याम्बारी के काप में उपकरण करना
चाहता था। दूसरा पहा यह है कि व्याकु दूसरे दोर
में वेन्डिंग कला या क्लैंड या जांदा कल्याचार और
इसके विषय विशाल संगठनात्मक आधार प्राप्त कर
चुके थे (उल्लेखनीय है कि यहाँ कला का विषय
धर्म व दैवत था और कल्याचार वाज्य संश्लण में
विभिन्न आयामों के बाय प्रतिष्ठित)।

3) सिल्क कट / अन्तर्राष्ट्रीय व्यावाचिक भागी कर नियंत्रण
दोषों के कावण कुषाणों को अतिक्रम विदेशी धन
प्राप्त हुआ जिससे आकर में मौद्रिक क्रांति संपन्न हुई।
इस क्षिप्ति में कुषाण शासक धन का व्यय अपने
ठेकेश्यों को प्राप्त करने की व्यवस्था दासित कर ले
गये थे।

विषय → धर्म
तकनीक / कला → यूनान (चौकि कलाफार यूनान का है,
इसके विषय में बुद्ध, ग्रौलो भै काप में मौजूद
दौगा)

शाजात्विक विशेषता → शैमन

अतिक्रम धन / मौद्रिक क्रांति → संगठित कला भै किए
अक्षर प्रदान कर दिया।

गांधार कला की विशेषताएँ -

गांधार कला पर बोमल व ग्रीक प्रभाव था। उल्लेखनीय है कि गांधार कला बौद्धी के उदय से पहले ही द्युनामी बौद्ध (ग्रीको बुद्धिस्त) कटे जाने वाले बैकिट्या तथा मद्य-पूर्वी के बज्य बसमाप्त हो चुके थे परंतु वे आकृति के तु० - प० हीम में मौजूद थे इसलिए उनका प्रभाव आकृतीय कला पर पड़ा जिसकी विशेषताएँ निम्न लिखी गयी -

- गांधार कला वा प्रमुख विषय छुड़ और बैषिक्षिक रहे हैं लेकिन मूर्तियों की संख्या पर प्रभाव द्युनामी वेकला अपेक्षी वा था।

- चूंकि कुषाण बोमन वाजाले का अनुचरण करते थे इसलिए छुड़ की मूर्तियों पर उनका प्रभाव भी पड़ जाने वाले मूर्तियाँ शाहसी वेशाभ्यास तथा मुद्राओं (expression) में विस्तृत की गयी।

- चूंकि मूर्तियाँ शाहसी थीं और दैवत्व प्रदान थी इसलिए मूर्तियों के कुचित केश (curly hair), मुख, ऊर्णा (आवे करने से लगाई जानी जाती है) आशामंडल आ प्रदर्शन किया गया है।

- मूर्तियों का निर्माण फैर तथा पण्डि हुर्षि निही से किया गया है जिस पर लुनछे और लाल कंग वा प्रयोग है।

- वक्षाशूषण, आकृतीय छोर, द्युनामी विशेषता को प्रकट करते हैं।

इस प्रवार-गांधार कला के क्षेत्र में वह छापा जा सकता है कि उसकी आख्या आवृतीय थी और दुक्षियाभक्ति पक्षीय वृक्षमें श्री देवीय प्रथाव

—युनानी था और वाजकी प्रभाव कैसे)

मथुरा कला की विशेषताएँ -

मथुरा कला तक पहुंचते हैं मूर्तिकला का स्वरूप बहुत दृढ़ तक आवरीय ही गया था इसलिए मथुरा कला जैसी में जो मूर्तियाँ बनी थीं यूरोपीय प्रभाव से मुक्त थीं और यथार्थिक / वास्तविक तृष्णशूलि को अपूर्ण करती थीं। विशेष बात यह है कि मथुरा कला में वे सिफे बुद्ध व बौद्धिसत्त्व की मूर्तियाँ बड़ी बड़ी जैसे तीर्थाकारी के साथ-२ कुण्डा शजाओं की भी थीं। अपने विकास क्रम में मथुरा कला जब गुप्त काल में पहुंची तो इसमें शिव, विष्णु, कार्तिकीय, सूर्य, ग्रह, ---- आदि मूर्तियाँ भी शामिल हुईं।

मथुरा कला को दो चरणों में विभाजित मान सकते हैं, प्रथम- कुण्डा काल और द्वितीय गुप्तकाल। इन दोनों यातों की सम्मिलित विशेषताएँ चिह्नित हैं-

→ इस कला का मौजिकु विषय बुद्ध और बौद्धिसत्त्व है परंतु इसका विकास अन्य आवरीय धार्मिक भूमिकाओं तक हुआ है जिसमें आवरीय पंथका के तत्त्व विद्यमान हैं।

→ मथुरा कला में प्रौढ़ता, प्राकृतिकता और गत्यात्मकता के लक्षण गांधार कला की तुलना में अधिक हैं।

- मधुरा कला में निर्मित मूर्तियों में नैसर्गिक / प्राकृतिक सौदर्य है, और आषयाभिकु आवों की अभियाकृति है।
- मधुरा कला में मूर्तियों में सादगी और सूखनता का उपयुक्त सिशण है।

NOTE → मधुरा कला में जिन छापण शासकों की मूर्तियों
बी, अमेरि कनिष्ठ महत्वपूर्ण हैं जो एक मूर्ति में अद्य-
रुद्धियार्थी पौश्चाक पढ़ने हुए हैं, द्वाय में तत्खार हैं और
प्रशुत्व की मुद्रा में बड़ा है (किंतु की मुद्रा)। इसके
काय - २ हुड्डे की मूर्तियों में ५ मुद्राओं को प्रमुखता
दी गयी है, ये हैं -

- ध्यान मुद्रा [पौष्टि का पैड, पद्मासन की मुद्रा]
- धर्मचक्रप्रवर्तन मुद्रा
- वक्त चुद्रा [दोनों हाय देने की मुद्रा]
- अश्रय मुद्रा [दोनों हाय क्षमा मुद्रा में]
- शूष्मि स्पर्श मुद्रा [पृथ्वी की ओर दोनों हाय]

मधुरा कला क्लॉली में जो ब्राह्मण द्यमि से
संबंधित मूर्तियाँ मिली हैं उसमें अवस्था प्रमुख है वराह
की मूर्ति जो श्रीतस्सा के मिकट उदयगिरि गुण। उसे प्रवेश
द्वार पर छांकित है, इसकी मूर्ति असंतादी विष्णु की
है और यह श्री उदयगिरि से ही प्राप्त हुई है। इसके
अतिकृत अविव, सूर्य, ब्रह्मवती, पर्वती, महिषमर्दिनी, अद्वितीयक
आदि मूर्तियाँ निर्मित की गई हैं।

प्रकल्प अपनी सूर्ति में कक्षाय धार्मिक, आध्यात्मिक व
शाजैतिक विशेषताओं को प्रकट कर आदर्शिता की पहचान
सुनिश्चित करती है। टिप्पणी कीजिए।

प्र→ कला केवल कुछ सृजनात्मक पद्धति नहीं है बल्कि यह
आदर्श चक्रवर्ती, पिघारी और अतिव्यक्तियों का संग्रह
है जो संस्कृति की निरंतरता, समाज के द्वेष आदर्श,
मूल्य वर्धा राज्य की धिविद्या में संजोयती है।

प्रकल्प

स्थापत्य कला / मंदिर वास्तुकला

① मंदिर क्यों ?

② मंदिर वास्तुकला ने धर्म पर क्या प्रभाव डाला।

③ मंदिर वास्तुकला ने किस प्रकार साजनीतिष्ठि / शास्त्रीय परिवेश को किस प्रकार प्रभावित किया।

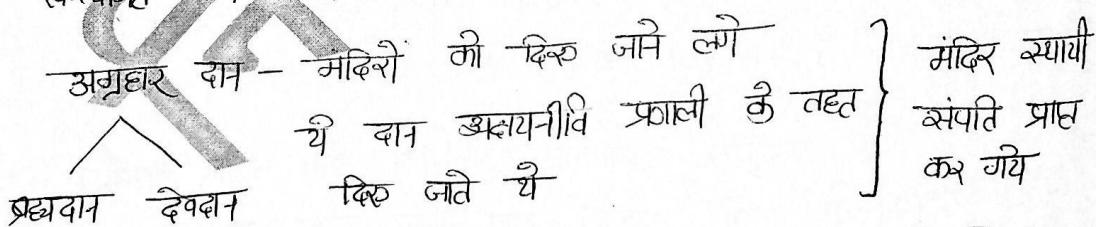
→ वैदीं में जिस धर्म का दीजाक्षेपण हुआ था उसमें देवताओं के प्रति अवधारणा श्री व्यष्टि हुई थी और कुछ समाज ले आकर और आवश्यका का उप श्री था। आर्यों ने धीरे - २ की के देवताओं द्वारा जापीकरण किया और फिर उसे कुछ संबंध व्यापित किया, [जैसे - द्यावा - पृथिवी - पिता और माता]। इस व्यवस्था में दो तथ्य व्यष्ट हुए - पहला - कि देवताओं को श्री ज्योति प्रकार + ओजन, कर्म और निवास की आवश्यकता ही है, जैसे - कि मनुष्य की। कुसरा - मनुष्य का यह ऐतिक गुण है कि वह देवताओं के साथ आदि वातावरण की व्यवस्था ले। संग्रहतः मंदिर इसी सोच के परिणाम थे।

चूंकि ज्ञानायण (बालमित्री कृत) और गदामार्त जैसे महाकाव्यों में चरित रथ मंदिर का वर्णन किया जा चुका था इसलिए यह जटा जाता समाज के लोगों को मंदिर वास्तुकला का ज्ञान या पूर्ण सम्मान के लिए किया जाता है। गुरुत बासकु जैसे प्राक्तुकला के वैष्णव धर्म पुर्वप्रतिष्ठा हुई। गुरुत बासकु कैसे औतिष्ठि उपादानों के संपर्क थे कि वे वास्तुकला द्वीप संसार प्रवास कर जैतथा मनुष्य के धार्मिक कर्तव्यों में पूर्ति / पूर्ण धर्म के प्रकार हुई।

⑨ मंदिर वास्तुकला में तत्वालीन आवश्यक धर्म को (विशेषकर ब्राह्मण धर्म की जिक्समें द्वारा तौर पर छोड़ त वेष्टन धर्म शामिल हो) की प्रशापित किया था। इसे चिं. लि. बिंदुओं द्वारा उपर किया जा सकता है-

• अब तक ब्राह्मण धर्म में इकत्व की उपरियति वैचारिक थी जिसे भाव्यात्म द्वारा प्राप्त किया जा सकता था लेकिन अब वह आंतिक अकथा में आ गयी जिसके पुरातकेप अपेक्षित अस्ति निकटा स्पष्टपित कर सकता था। इसी विषय के अस्ति निकटा स्पष्टपित कर सकता था। इसी विषय के अस्ति निकटा स्पष्टपित कर सकता था।

• मंदिरों की स्थापना के पूर्व ब्राह्मण धर्म संगठनात्मक स्तर पर बैद्ध ग्रन्थों या क्सलिर वह ठंडे समय तक संस्थाप्त कर धारण नष्टी कर सका लेकिन मंदिरों ने उसे संगठन के कर में अजबूत कर संस्थाप्त कर प्रदान कर दिया।



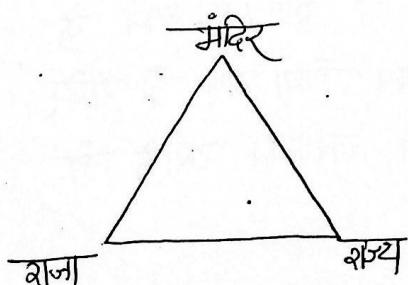
मंदिर स्थाप्ति प्राप्त कर गये

इसी प्रणाली के तहत मंदिरों की गांव दान दिक्षा जाने लगे

→ प्रशासन मंदिर की नियमेंदारी

→ गांव के होणी के नैतिक प्रबंधन (शिळा, संस्कार --- आदि)

③



मंदिर, राज्य और राजा (राजल) के बीच कक्ष मिप्रीय संबंध
व्यापित हुआ अर्थात् राजा अपनी पवित्रता, धर्म की पुनर्स्थापना
के प्रति प्रतिष्ठित और चैतिक कल्याण की व्यापना है।
मंदिर निर्माण करने वाले हैं। इसकी तरफ मंदिरों की अवधा
और मंदिर में प्रतिष्ठित देवताओं की प्रतिमाओं के आपने
राजवंश की जोड़कर रखने वाले और मंदिर की स्थापना,
राज्य की समृद्धि की पूरक रूप रही।

मंदिर निर्माण की छोलियाँ -

- ① नागर छोली → उभाष्य - विष्णु को तक
- ② द्रविड़ छोली → कृष्ण - गोदावरी से कन्याकुमारी
- ③ बेसर छोली → विष्णु से कृष्ण तक

नागर छोली → नागर आषद मुख्य कप

अर्थात् क्स छोली का आवंश नगरों से हुआ जिसमें बाह
के राजा में प्रादेशिक विभास किया। इस छोली के मंदिर
उग्रभग उनकी शताष्ठी तक बढ़ते रहे जिनकी विशेषताएँ
निम्न लिखीं -

चौकोर रार्थगृह,

आंशिक मंदिरों में शिवकर वा अमाव (जैसे - श्रीतक गाँव
वा मंदिर)।

परिवर्ती मंदिरों में शिवकर योजना का प्रयोग जो सूक्ष्म:
त्रिवीणीय थी जिसे वास्तुकालियों ने 'मुख गंडप' या
'जगमोहन' की संज्ञा दी है। इस छोली के प्रभु

मंदिरों में नि. लि. शामिल है -

कंदरिया महादेव मंदिर (खंजुराहो)

लिंगराज मंदिर (श्रवनकेश्वर)

बरगन्धाथ मंदिर (पुरी)

सूर्य मंदिर (कोणार्क)

मुक्तेश्वर मंदिर (उड़ीसा)

सौभग्नाथ मंदिर (गुजरात)

दिलवाड़ा (मोउट आइ)

IAS

द्रविड़ शैली → द्रविड़ शैली के मंदिर अपनी दी विशेषताओं

के लिए विशेषकर जाने जाते हैं प्रथम, शिखर - द्रविड़ शैली के मंदिरों के शिखर पिण्डिय हैं जो बुर्जाजिले और अवन की तरह निर्मित किये गये हैं। प्रथेत मंजिल विशिष्ट प्रगार के लघु मंदिरों और चूर्णियों की हास्यका त्रै लिंग में है जिनके ऊपर विशाल आमतक का निर्माण कराया गया है। (दूसरी विशेषता) हृषीय, गोपुरम

यह मुख्य काप से मंदिर का प्रमुख छान है

जिसमें नंदी तो क्षापित किया जाता है, यद्यपि

यह शैली पाण्ड्य ब्राह्मणों की थी लेकिन इसे

चोलों व पत्तवीं द्वारा भी प्रमुखता ही, इस शैली के प्रमुख मंदिरों में

तंजौर का पृष्ठदेश्वर मंदिर

गांधी का लैंगाश मंदिर

आमला रुक्म त्रै वय (कप्त पैगोड़ा)

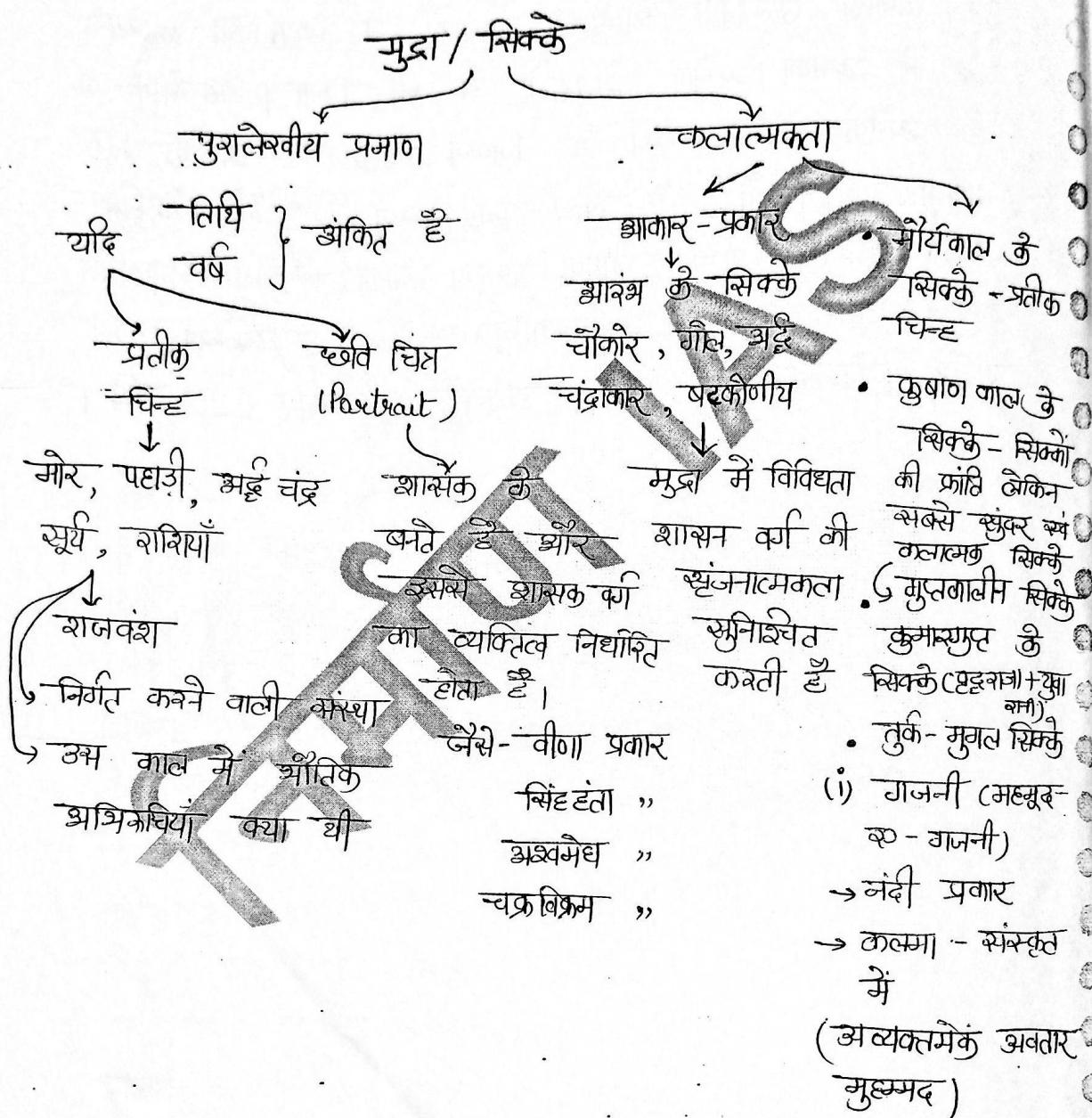
बैसर छोली → बैसर छोली में नगर व द्रवित छोली की
 मिश्रित विशेषताएँ पायी जाती हैं। मुख्य कप से इस छोली
 मा विवाह उत्तरवर्ती चालुक्य वासियों ने किया था लेकिन
 बाद में इसका प्रयोग होयसलों ने भी किया। इस छोली
 के अनेक मंदिर ऐसे हैं जिनमें कुछ के अधिक ...
 गंगागृह हैं, जिनमें कुछ बड़े कृतम्‌य हैं और गोपुरम्‌
 वा यह तो अथाव अयवा उसका आमान छोड़ा है।
 प्रमुख उदाधरणों में मलिकार्जुन मंदिर, महाबलीष्वर
 मंदिर, चैत्नास्वामी मंदिर, होयकलीश्वर मंदिर --- आदि।

लक्ष्मी प्रताप सिंह
 मो० गोशी

संस्कृत में कल्पा
 लिखवाया सिक्कों ५५
 अस्मृद गजमी

२१/१२/२०१७

* सिक्के किस प्रकार के हरिदास क्यों संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते हैं?



(iv) जँडागीर - १२ बारियों के चिह्न, छब्बैंडा के साथ

उपर्युक्त अवकाश ही यह संकेत है कि आक्रीय बास्तों
द्वारा नि० लि० प्रयोजनों से सिक्कों पर डालकरण करवाये
गये थे-

- ① सिक्कों के माध्यम से वे अपनी सुंजामलु और कलालक
अभिकाचियों को जनता के मध्य प्रस्तुत कर सके।
- ② शास्त्र की काइसके पीछे उक्तेय क्या है, यह
सुस्पष्ट हो व्हाँ जैसा कि बतिष्ठतारों व गुदाशिलियों
ने निष्कर्ष निकाले हैं। उदाहरण के तौर पर मौर्यकाल
तक बाजत का दैवीय क्षवक्षप पूरी तरह से स्पष्ट
नहीं हुआ था इसलिए वहां वंश, प्रकृति अथवा
शब्दगोलीय पिशेषताओं की महत्वपूर्ण स्थान दिया गया
लेकिन शाकु - सीधियन (पर्याय) - कुषाण नाल में
बहुत हृद रक्त बाजतस और दैवत का संबंध स्पष्ट हो
गया या जिसमें धर्म की श्रूमिका महत्वपूर्ण थी। उदाहरण
के तौर पर कुषाण शास्त्रों ने अपने सिक्कों पर
अमठिस लिखवाया, वासुदेव हुण वृषभ शिव वा अंकन
श्री करवाया।

हुए कल में शास्त्र क्षयं पक्षमभागत
हो गया था इसलिए उसने अपने आपको द्वी ईश्वरीय
क्षय में उपाधित करा दिया लेकिन बतिष्ठतारों ने कुमार्युप
के सिक्कों पर बाजा - रानी के अंकन को बनागतक
हुएकोण से छेकर्ने का प्रयास किया है।

तुकि-मुग्ल नाल में सिक्कों से दो अदेश
मिलते हैं। प्रथम - फिरते के लिए आकर में ज्वीकृति प्रदान
करने के अपार्ये के काप में और द्वितीय अपक्षपापकु

के काप में सबी द्वारा व सरकृतियों को समायोजित करने के प्रतीक हैं। काप में, उदाहरण के तौर पर मुहम्मद-रू-गजनी और मोहम्मद गौरी ने जो सिक्खों के चलवाये थे आकृतीय शासकों ने नक्ल मास थे बायीत मुहम्मद-रू-गजनी ने अपने प्रगाढ़ के सिक्खों के चलवाये और उन पर संकृत में कलमा बुद्धवाया जबकि मोहम्मद गौरी ने लक्ष्मी के आय-२ मुहम्मद बिन सम अंकित करवाया। ऐसा थे शासक - किसी उपकार या ऊर चक्रों के नाम नहीं कहे थे बल्कि उन्हें आकृतीय प्रजा के लिए, जो उनके मौलिक विद्वान् से पश्चिमित नहीं थी, इनके गान्धम से उनके लिए स्थान निर्दित कर दें थे।

आकबर के नाम स्तीत नाम के सिक्ख शब्द की स्थापना तथा विस्तार के बाद चलाये गये स्मृतियों में जाना जा सकता है कि वह सिक्खों द्वारा 'मुहम्मद-रू-कुल' गीत के परिणाम थे। जैषीर संभवतः १२ शशीयों के नाम से उस नीति को नयी नैवार्दियों प्रकार कर रखा या उनके उसके शब्द के अधिक गोले सिक्खों नाम-से-नाम किसें स्मित के अनुसार नामाल्मक लक्षित ले पतीकु थे क्योंकि कु इपणी में वह कुछ है कि "कु बादशाह ने कु शब्द के द्वारा जो व्याप्राय को इबा दिया।

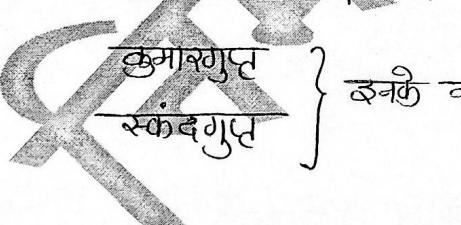
⑤ तुक्रा की शुद्धता, तुक्रा में प्रयुक्त घटु की शुद्धता

मौर्य राज तक, तांडा व चाँदी के सिक्के
 मालिक/गाषकु कर्षणी

चाँदी भारत में ब्रह्मपुर्व द्वीपीय तो द्विनाम, उत्तरी आफगानिस्तान, मध्य एशिया से प्राप्त करते थे

i) यादवी दुनिया से भारत के संपर्क इसे प्रशावित करेंगे अर्थात् संबंधों वे बदलाव चाँदी की आपूर्ति पर प्रशाव उभिंगे। अदि चाँदी पर्याप्त मात्रा में भारत आते रहेंगे तो व्यवस्था के उत्पाद के साथ-२ उत्तरके गाँड़ीक बागाव में भी पृष्ठ द्वैती रहेंगी परंतु आपूर्ति खादित हुई गी दी विधि दैगे। प्रथम- चुन्ना का अधिमूल्यन और हिंदीय मुद्रा में नयी धातु मिलाकर कपकती मुद्रा वा सिमाण ताकि (आवश्यक) चुन्ना स्फीटि को बदलकर करवा जा सके।

ii) व्यापारिक गतिविधियों में संकुचन

iii)  { कुमारगुप्त संकुचनगुप्त } द्वारके व्यापार (i) शैर्पीकरण [अन्य धातु के सिक्के पर परत चढ़वाना]
 (ii) मिलाकर (ब्लॉट)

सिक्के केवल कला का वही प्रदर्शित करते हैं अपितु ये राज्यव्यवस्था, प्रशासन, अर्थव्यवस्था, आर्थिक उत्तर-पदाव के पर्याय हीते हैं।

विजयनगर

शाही
पद्म
वास्तुकला

Vijaynagar
Victory
over the
life
Tamil
Telugu
Kannad

स्थापना - संगम बंधुओं द्वारा (दक्षिण व बुक्का)

[Hindu → मंदिर , Telugu → शाही]

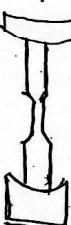
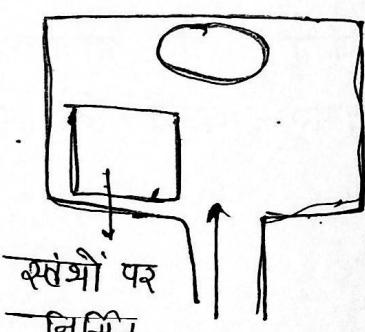
→ दक्षिण ने क्वयं को विकापहा का प्रतिनिधि घोषित किया।
वसना अर्थ यह हुआ कि विजयनगर भास्कर विकापास (पिण्डु) या उनके विनिमय अवतारों की प्रतिष्ठा जितनी अधिक करते जाएँ, उतनी ही तक उनके प्रभुत्व का विस्तार क्वयं होता जाएगा।

व्यामिक लेखण → पश्चात् का विस्तार

- दैवतय - II → विड्ठल क्वामी मंदिर
- कृष्णाक्षमी का मंदिर } कृष्णदेव क्वाय
- द्वजाक्षरम का मंदिर }

इन मंदिरों की दो प्रमुख विशेषताएँ थीं -

- ① कल्याणमंडप का निर्माण
- ② स्तंश्री की विशिष्टता
 - अत्यधिक अलंकृत किया गया है
 - स्तंश्री पर अधिकांशतः चौराणिक पशुओं (फिरोबकर घोड़ा) की अंकित किया गया है।
 - संगीतमय संग्रह



साहित्य की शुरुआत - पुकार प्रथम



-पुष-तुगार कम्पन पूर्ण, हंगा वेदी



पुस्तक लिखी

इसके बाद कुछ अन्य फुस्तके दैविद-II के समय आयी
जैकिन

यह अल्पा भार है कि साधारण जैसे विडोनीं ने इसी
वाल में 'वेदी' पर टीका लिखी। कृष्णदेवराय के समय
पहली बार साहित्य लेखन संगठनामुक्त कथ से किया गया
और इस स्तर तो किया गया कि विडोनीं ने इस
वाल की तेलुगु साहित्य का ऐत्यर्थ्य युग (Classical Age
of Telugu literature) कहा गया।

कृष्ण देवराय ने कथय की पुस्तके लिखी थी - कफु तेलुगु
जै और द्विसरी कम्पन्तु जै जो क्रमशः यानुकृत मात्यह
और वक्तव्यिकाना परिचायम है। इसके साथ ही उसने
अष्ट दिग्गज जामकु कम्पन्या तो मिशनी किया जिसमें 8
कवि श्रमिले हैं, जैसे - अल्ला सीनी पैदन, तेवारी शर्म
भिंगम / कृष्णम, लक्ष्मी नाशयन, शाजनाय दिनदिमा।

अल्ला सीनी पैदन की कृष्णदेवराय ने आंध्रकविता पितामह
की उपाधि दी थी। और इसके स्वरूपों से तीन प्रकार
ए साहित्य लिखा गया, जिसमें से पहला तेलुगु
साहित्य का आधार बना.

मिश्रबंध → तेलुगु + कस्तूर आषा का मिश्रण

प्रस्वात

उत्पादय

लक्ष्मी नाशयन की कांगीत पर आधारित ही पुस्तकें - कांगीत
सूर्योदय

क्वचिं भैल कलानिधि - शाम या गात्र (प्राचीनिक संगीत का आधार)

इनके अतिरिक्त तीन छोटी की कमर्पित उस्तुतें भी विस्ववर्ण गयी -

(i) देवी - देवताओं को कमर्पित

eg. → विष्णु आया पिलास
 |
 ताकु ब्रह्म वाजीव

(ii) तीर्थ क्षेत्रों की कमर्पित

जैसे - (i) धर्मिका चल - महात्म्य (ज्ञेयक - ध्वरजटी)

(ii) कालदृष्टि महात्म्य

(iii) धर्मचार्यों की प्रशंसा में - उद्भवटकाश्वा चक्रिष्ठ

अल्पवर क्षेत्रों की जीवनियाँ
(संकृत + तेलुगु गो संरहान)